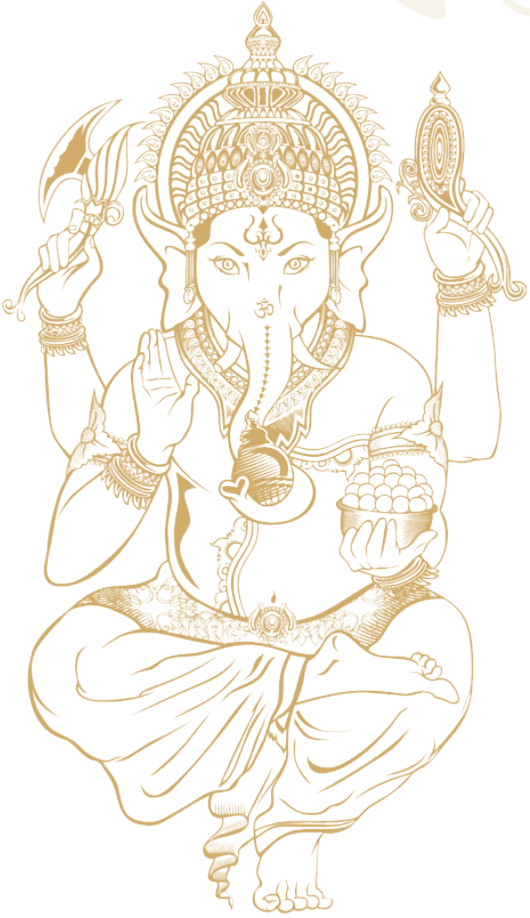

Piyush

15 Nov 2025

12:08 PM

Muzaffarpur

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120165901

तिथि 15/11/2025 **समय** 12:08:51 **वार** शनिवार **स्थान** Muzaffarpur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:10
अक्षांश 26:07:00 उत्तर **रेखांश** 85:23:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:11:32 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	: 15:58:49 घं
वेलान्तर	: 00:15:27 घं
सूर्योदय	: 06:07:09 घं
सूर्यास्त	: 16:59:00 घं
चैत्रादि संवत	: 2082
शक संवत	: 1947
मास	: मार्गशीर्ष
पक्ष	: कृष्ण
तिथि	: 11
नक्षत्र	: उ०फाल्गुनी
योग	: विष्कुम्भ
करण	: बव

अवकहड़ा चक्र

गण	: मनुष्य
योनि	: गौ
नाड़ी	: आद्य
वर्ण	: वैश्य
वश्य	: मानव
वर्ग	: मूषक
युँजा	: मध्य
हंसक	: भूमि
जन्म नामाक्षर	: पा-पवन
पाया(रा.-न.)	: रजत-रजत
होरा	: चंद्र
चौघड़िया	: चर

विंशोत्तरी

सूर्य 2वर्ष 7मा 6दि

सूर्य	
	15/11/2025
	22/06/2028
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	15/11/2025
शनि	10/04/2026
बुध	15/02/2027
केतु	23/06/2027
शुक्र	22/06/2028

योगिनी

सिद्धा 3वर्ष 0मा 12दि

सिद्धा	
	15/11/2025
	27/11/2028
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	15/11/2025
धान्या	28/12/2025
भ्रामरी	08/10/2026
भद्रिका	28/09/2027
उल्का	27/11/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			25:35:34	मक	धनिष्ठा	1	मंगल	राहु	---	0:00			
सूर्य			28:55:50	तुला	विशाखा	3	गुरु	सूर्य	नीच राशि	1.68	आत्मा	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			04:13:14	कन्या	उ०फाल्गुनी	3	सूर्य	शनि	मित्र राशि	1.14	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल		अ	13:31:37	वृश्चि	अनुराधा	4	शनि	राहु	स्वराशि	1.15	भ्रातृ	भ्रातृ	साधक
बुध	व	अ	10:13:23	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	शुक्र	सम राशि	1.10	मातृ	ज्ञाति	साधक
गुरु	व		00:54:42	कर्क	पुनर्वसु	4	गुरु	मंगल	उच्च राशि	1.33	कलत्र	धन	प्रत्यारि
शुक्र			16:13:33	तुला	स्वाति	3	राहु	शुक्र	मूलत्रिकोण	0.95	अमात्य	कलत्र	क्षेम
शनि	व		01:05:10	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	मंगल	सम राशि	0.74	ज्ञाति	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		21:55:09	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	शनि	मित्र राशि		---	ज्ञान	प्रत्यारि
केतु	व		21:55:09	सिंह	पू०फाल्गुनी	3	शुक्र	शनि	शत्रु राशि		---	मोक्ष	अतिमित्र

लग्न-चलित

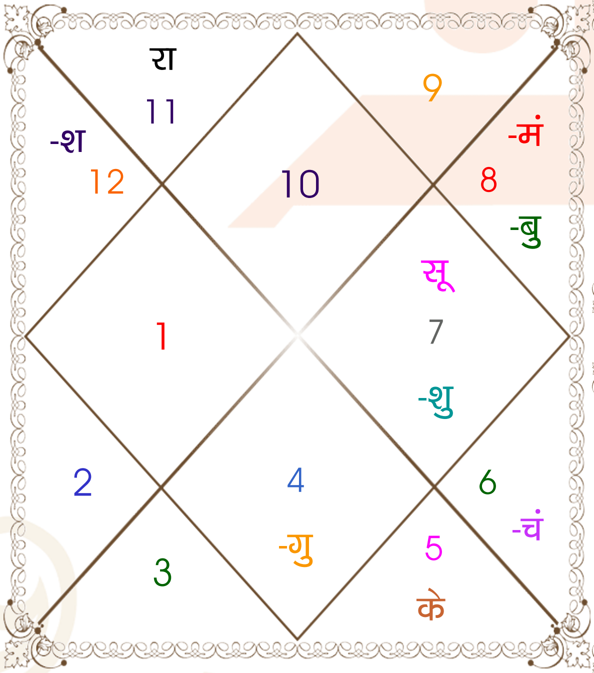

चन्द्र कुंडली

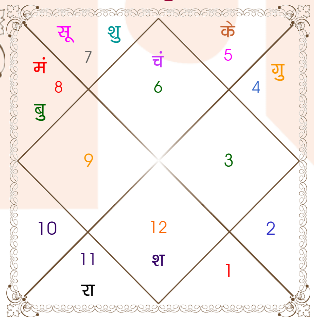

नवमांश कुंडली

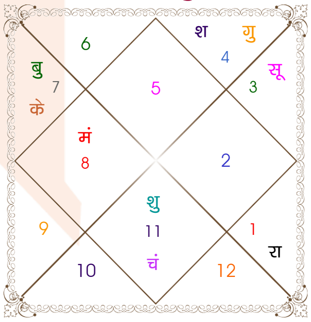

सर्वाष्टकवर्ग

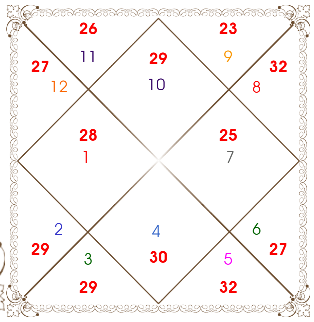

दशमांश कुंडली

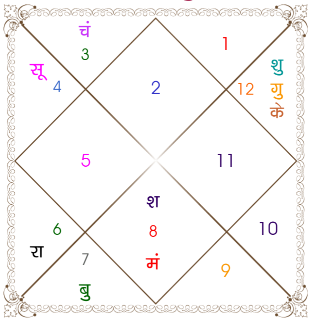

Shree Siddhivinayak Astro
Gola Bandh Road Muzaffarpur
9693608763
shreesiddhivinayakastro@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के तृतीय चरण में हुआ है। अतः आपकी जन्मराशि कन्या तथा राशिस्वामी बुध होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ग मूषक गण मनुष्य, नाड़ी आद्य, योनि गौ तथा वर्ण वैश्य होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्मनाम का प्रथम अक्षर ”प” या ”पा” से प्रारम्भ होगा यथा- पवनकुमार

आप एक दानी तथा दयालु पुरुष होंगे। दानशीलता का भाव प्रारम्भ से ही आपके मन में विद्यमान रहेगा तथा दीनदुखियों के प्रति इस भाव का यत्नपूर्वक पालन करते रहेंगे। आपके मन में दया, करूणा तथा सहानुभूति हमेशा विद्यमान रहेगी। आपका आचरण श्रेष्ठ तथा प्रशंसनीय रहेगा। आप अपने अच्छे कार्यों तथा मृदुस्वभाव से समाज में सबको प्रभावित करने में सफलता प्राप्त करेंगे तथा उचित मान सम्मान के भी अधिकारी होंगे। आप बुद्धिमान होंगे तथा अपनी तीव्र बुद्धि के द्वारा राज्य या सेना में कोई उच्च पद प्राप्त करने में सफलता प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही आप अपने समाज में यश तथा कीर्तिशाली भी रहेंगे।

दाता दयालु सुतरां सुशीलो विशालकीर्तिर्नृपते प्रधानः।
धीरोऽत्यन्तमृदुर्नरः स्याच्चेदुत्तराफाल्गुनिका प्रसूतौ।।
जातकाभरणम्

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न जातक दानी, दयालु, शीलवान, कीर्तिवान राजमंत्री, स्वभाव से कोमल तथा धैर्यधारण करने वाला होता है।

आप जीवन में समस्त सुखों का प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करेंगे तथा सुखाभाव नहीं रहेगा। समाज से भी आपको इच्छित आदर की प्राप्ति होगी। आप कृतज्ञ होंगे तथा अन्यजनों द्वारा उपकृत होने पर उनके उपकार को मानेंगे। आप महान ज्ञानी तथा सद्गुणों से भी सुशोभित रहेंगे।

भोगी चोत्तरफाल्गुनीभजनितो कृतज्ञः सुधीः।।
जातकपरिजातः

अर्थात उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक भोगी सम्माननीय, कृतज्ञ तथा विद्वान होता है।

समाज में सर्वजनों के मध्य आप अत्यन्त लोकप्रियता प्राप्त करेंगे तथा अपने अच्छे कर्मों तथा मृदुस्वभाव से उन्हें प्रभावित करने में सफल होंगे। साथ ही आप श्रेष्ठ विद्या प्राप्त करेंगे तथा उसी के द्वारा अपना जीवकोपार्जन सम्पन्न करेंगे। इसके साथ ही अपने जीवन को सुख तथा आनन्दपूर्वक व्यतीत करेंगे।

सुभगो विद्याप्तधनो भोगी सुखभागद्वितीयफाल्गुन्यां।
बृहज्जातकम्

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक सर्वप्रिय, विद्या से धन प्राप्त करने वाला, भोगी तथा सुखी होता है।

आप स्वभाव से ही सहनशील प्रकृति से युक्त रहेंगे तथा वीरता के सभी गुणों से सुसम्पन्न रहेंगे। आप अपने जीवन के समस्त कार्यकलापों को साहस के साथ पूर्ण करने में चतुर रहेंगे। आप प्रिय वाणी का अपने भाषण में प्रयोग करेंगे। निशानेबाजी में भी आप सिद्धहस्त होंगे। एक महान योद्धा के गुण भी आपमें पाये जायेंगे तथा अन्यजनों से आप मधुर व्यवहार रखेंगे।

दान्तः शूरो मृदुर्वक्ता धनुर्वेदार्थ पण्डितः।
उत्तराफाल्गुनी जातो महायोद्धा जनप्रियः।।
मानसागरी

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक सहनशील वीर तथा मधुर बोलने वाला, धनुष बाण विद्या में निपुण, महायोद्धा तथा सर्वसाधारण का प्रिय होता है।

आप इन्द्रियों को पूर्ण रूप से नियंत्रण रखने में सफल रहेंगे। आप शान्त चित्त के व्यक्ति होंगे तथा शान्त मन से ही कार्यों को सम्पन्न करेंगे। साथ ही आपकी बुद्धि अत्यन्त तीक्ष्ण होगी एवं बुद्धि चातुर्य से सबको प्रभावित करेंगे तथा मान सम्मान प्राप्त करेंगे।

दान्तः शान्तो मृदुर्वक्ता धनुर्वेदस्य पारगः।
उत्तराफाल्गुनिजातो महाबुद्धिर्जनः प्रियः।।
जातकदीपिका

अर्थात् उत्तराफाल्गुनी में उत्पन्न जातक इन्द्रियों को वश में करने वाला, शान्त स्वभाव से युक्त, मधुर बोलने वाला, धनुर्वेद में पारंगत, महान बुद्धिमान तथा जनता का प्रिय होता है।

रजत पाद में उत्पन्न होने के कारण आप जीवन में स्त्री एवं पुत्रोंसहित धन धान्य से सर्वदा सम्पूर्ण रहेंगे। पुराणादि शास्त्रों के श्रवण करने में भी आपकी पूर्ण निष्ठा रहेंगी। आपके सभी कार्य पुण्य के लिए समर्पित होगे तथा तीर्थ यात्राओं के प्रति भी आपकी श्रद्धा तथा रूचि रहेगी। जीवन में आप समस्त भौतिक संसाधनों एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग भी करेंगे। साथ ही काव्य शास्त्र में भी आपकी रूचि रहेगी एवं इसके अध्ययन में भी आप तत्पर रहेंगे। आप बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं से भी सुशोभित रहेंगे। आप के सभी कार्य प्रारम्भिक अवस्था में ही सिद्ध हो जाएंगे। बन्धुजनों से आपके मधुर एवं स्नेह पूर्ण संबंध रहेंगे एवं उनसे आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आपका भाग्य भी उत्तम रहेगा एवं अनुकूल समय पर उदय होगा। धार्मिक तथा पितृ आदि कार्यों के प्रति भी आप निष्ठावान रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा सद्गुणों से सम्पन्न पुत्रों से सर्वदा युक्त रहेंगे। इस प्रकार आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

कन्या राशि में उत्पन्न होने के कारण आपके हाथ लम्बे तथा अन्य अंग यथा नाक, कान, दाँत तथा चेहरा अति सुन्दर एवं दर्शनीय होंगे। स्त्रीवर्ग के प्रति आपके मन में आकर्षण की प्रबलता रहेगी। आप प्रसिद्ध विद्वान तथा धार्मिक संस्थाओं के संचालक भी होंगे। इन संस्थाओं में आप हमेशा उच्च पदों की प्राप्ति करेंगे। आपकी प्रवृति पूर्ण रूप से धार्मिक होगी तथा नियमपूर्वक धार्मिक रीतियों का अनुपालन करेंगे। आपकी प्रिय एवं मधुर वाणी से सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे साथ ही सत्य का अनुपालन करने तथा सफाई के प्रति आप बहुत ही सजग रहेंगे। आपके अधिकाँश कार्य धैर्यपूर्वक सम्पन्न होंगे। दूसरे लोगों की भलाई के कार्यों को भी आप अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा स्वयं भी इसमें रूचिशील रहेंगे। आप समस्त प्राणियों पर दया तथा करूणा के भाव को प्रदर्शित करेंगे। साथ ही आपका शारीरिक सौन्दर्य भी आकर्षक रहेगा एवं समस्त सुखों का आप जीवन में उपभोग करते रहेंगे परन्तु संतति संख्या में पुत्रियों की अपेक्षा पुत्रों की संख्या अल्प रहेगी।

स्त्रीलोलो लम्बबाहुर्ललिततनुमुखश्चारुदन्ताक्षिणिकर्णौ।
विद्धानाचार्य धर्मा प्रियवचनयुतः सत्यशील प्रधानः।।
धीरः सत्वानुकम्पी परविषयरतः क्षान्तिसौभाग्यभागी।
कन्याप्रायप्रसूतिबहुसुतरहितः कन्यकायां शशाङ्कः।।
सारावली

आप लज्जालु तथा आलस्यमयी दृष्टि से युक्त होकर गमनशील रहेंगे। आपका स्कन्ध भाग तथा भुजाएं शिथिलता से युक्त रहेंगी तथा जीवन के समस्त भौतिक सुखों का आनन्दपूर्वक उपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही आप कलाओं से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हमेशा संबंधित रहेंगे। आप नाना प्रकार के शास्त्रों के विषय में जानने वाले होंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे परन्तु स्त्री वर्ग के प्रति आपके मन में तीव्र आकर्षण रहेगा। आप किसी अन्य व्यक्ति, मित्र या संबंधी के धन तथा मकान का उपयोग करने वाले होंगे तथा घर से बाहर विदेश में जाकर स्थाई रूप से निवास भी कर सकेंगे।

व्रीळामंथरचारुवीक्षणगतिः स्रस्तांसवाहुः सुखी।
श्लक्ष्णः सत्यरतः कलासुनिपुणः शास्त्रार्थविद्धार्मिकः।।
मेधावी सुरतप्रियः परगृहे वितैश्च संयुज्यते।
कन्यायां परदेशगः प्रियवचः कन्याप्रजोळल्पात्मजः।।
बृहज्जातकम्

आप स्त्रियों को अपने नाना प्रकार की भाव भंगिमओं तथा कार्यकलापों से प्रसन्न करने में दक्षता प्राप्त करेंगे। इससे वे आपकी ओर आकर्षित रहेंगी। आप हमेशा सत्कार्यों के विषय में सोचेंगे तथा उन्हें ही प्रयत्नपूर्वक सम्पन्न करेंगे। साथ ही आपका भाग्य हमेशा आपके महत्वपूर्ण तथा शुभकार्यों में सफलता प्राप्त करने के लिए प्रमुख सहायक सिद्ध होगा।

युवतिगे शशिनि प्रमदाजनप्रबलकेलिबिलासकुतूहलैः।
विनयशील सुताजननोत्सवै सुविधिना सहितः पुभान।।
जातकाभरणम्

आपका स्वभाव तथा बुद्धि निर्मलता से युक्त तथा प्रपंच हीन रहेगी अर्थात् निश्छल स्वभाव रहेगा। लेखन कार्य की ओर आपकी नैसर्गिक रूचिशीलता रहेगी तथा काव्य की रचना करने में आपको सफलता प्राप्त होगी। आपका चित्त हमेशा शान्त रहेगा अपने श्रेष्ठ संबंधियों तथा गुरूजनों के प्रति आपके मन में विशेष सम्मान रहेगा एवं उनके हित के लिए आप सदैव तत्पर रहेंगे।

विमलमति सुशीलो लेखबुद्धिः कविश्च।
कृषिबलगुणशाली शान्तियुग्मः स्वभावः।।
भवति नयनरोगी धार्मिकः शीलयुक्तः।।
गुरूजन हितकर्ता कन्यका यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

आप विलासी भी होंगे तथा विलासमय वस्तुओं पर खुले मन से व्यय करके उनका संग्रह करेंगे। गुरूजनों एवं विद्वद्जनों को आप विशेष सम्मान प्रदान करेंगे तथा वे लोग भी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आप दीनदुखियों के प्रति अपने मन में दानशीलता का भाव रखेंगे तथा यथासंभव उनकी सहायता करेंगे। वैदिकधर्म के आप पूर्ण रूप से अनुयायी रहेंगे। आपके मन में सभी जनों के प्रति प्यार एवं स्नेह की भावना सर्वदा विद्यमान रहेगी तथा सब लोगों के मध्य आप लोकप्रिय रहेंगे। अभिनय के प्रति आप पूर्ण रूप से समर्पित रहेंगे। आप अपने घर से बाहर देश विदेश में भी निवास करेंगे।

विलासी सुजनाह्लादी सुभगो धर्मपूरितः।
दातादक्षः कविर्बुद्धि वेदमार्ग परायणः।।
सर्वलोकप्रियो नाट्यगान्धर्व व्यसने रतः।
प्रवासशीलः स्त्री दुखी कन्याजातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप अपने सम्पूर्ण जीवन में विविध प्रकार के भौतिक तथा सांसारिक सुख वैभव एवं ऐश्वर्य का प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करके जीवन व्यतीत करेंगे। कामभावना की भावना की प्रवलता भी आपके हृदय में सर्वदा विद्यमान रहेगी तथा कभी कभी आप इससे व्याकुलता की भी अनुभूति करेंगे। दूसरे लोगों के प्रति आपकी भावनाएं अत्यन्त कोमलता से युक्त रहेगी तथा सर्वजनों से आप मधुर संबंधों को स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। साथ ही आप बहुत से शास्त्रों के ज्ञाता तथा कलाओं के मर्मज्ञ भी रहेंगे।

कन्यास्थे विषयातुरो ललितवाग्मि विद्याधिको भोगवान।
जातकपरिजातः

मनुष्य गण में जन्म होने के कारण आप धार्मिकता की भावना से परिपूर्ण तथा ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति हमेशा श्रद्धालु रहेंगे तथा अभिमान की प्रवृति से भी आप युक्त रहेंगे। शारीरिक तथा बौद्धिक बल का आप में अभाव नहीं रहेगा इनसे आप हमेशा पूर्ण रहेंगे। साथ ही कई अन्य कार्यों तथा कलाओं के विषय में भी आप पूर्ण रूप से दक्ष रहेंगे। दया एवं

करूणा की भावना से आप हमेशा युक्त रहेंगे तथा दीनदुखियों के प्रति इस भावना का प्रदर्शन करते रहेंगे। आपकी बुद्धि तीक्ष्ण होगी जिसके प्रभाव को सभी लोग स्वीकार करेंगे इसके अतिरिक्त आप के आश्रय में बहुत से लोग सुखानुभूति भी प्राप्त करेंगे।

आप धन तथा मान सम्मान से सर्वदा सुशोभित रहेंगे। इनकी न्यूनता भी आपको कभी प्रतीत नहीं होगी। आपके नेत्र विशाल तथा शरीर गौर वर्ण से युक्त रहेंगा। निशानेबाजी की कला में आप विशेषज्ञता प्राप्त करेंगे एवं नगर के सभी लोगों पर आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा तथा ये सब आपके कहे अनुसार ही कार्य करेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

गो योनि में जन्म लेने के कारण आप महिलाओं के वर्ग में अत्यन्त लोकप्रिय रहेंगे। इनसे आपको पूर्ण सम्मान तथा निरन्तर सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी। आप उत्साही पुरुष होंगे तथा सदैव उत्साह से परिपूर्ण होकर अपने जीवन में सम्मान तथा सफलता अर्जित करेंगे। वाद विवाद में आप अत्यन्त ही निपुण रहेंगे तथा इसमें आप पर कोई भी विजय प्राप्त करने में सर्वथा असफल रहेगा।

स्त्रीणां प्रियः सदोत्साही बहुवाक्य विशारदः।
स्वल्पायुश्चनरो जातः गो योनौ न सशंयः।।
मानसागरी

अर्थात गोयोनि में उत्पन्न जातक स्त्रियों का प्रिय, सदा उत्साह में रहनेवाला, वादविवाद में चतुर एवं अल्पायु होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति नवम भाव में है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। आपके शुभ प्रभाव से उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। आपकी सुख संसाधनों के प्रति वे चिन्तित रहेंगी तथा प्रयत्न पूर्वक आपको इन सुख संसाधनों का उपभोग करायेंगी। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी उनका विशेष योगदान रहेगा। इसके अतिरिक्त उन्हीं की सहायता एवं सहयोग से आप आवश्यक सुखसंसाधनों को भी प्राप्त करेंगे।

आप भी उनके आज्ञाकारी होंगे तथा पूर्ण रूप से उनका हार्दिक सम्मान करेंगे। जीवन में उनको पूर्ण सुख सुविधा प्रदान करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर होंगे तथा यदा कदा ही कोई मतभेद रहेंगे अन्यथा एक दूसरें से सहमत ही रहेंगे।

इस प्रकार आप एक दूसरें के लिए सामान्य शुभ रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति एकादश भाव में है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक व्याकुलता की वे अनुभूति करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव रहेगा एवं धन सम्पत्ति से भी वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में अवसरानुकूल आपको अपना वांछित सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप आय के साधनों की वृद्धि करने में भी उनसे सहायता अजित करेंगे। आप को सुख दुःख में उनसे पूर्ण सहयोग मिलेगा तथा वे आप पर विश्वास करेंगे।

आप भी हृदय से उनके प्रति सम्मान का भाव रखेंगे तथा समयानुसार उनको आथिक तथा अन्य क्षेत्रों में सहायता प्रदान करते रहेंगे। इसके साथ ही उनकी आय की वृद्धि में भी आप वांछित सहयोग देंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण उनमें तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु यह स्थाई रहेगी एवं कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए भाद्रपद मास पंचमी, दशमी तथा पौर्णमासी तिथियाँ श्रवण नक्षत्र, शुभयोग, कौलवकरण, शनिवार प्रथम प्रहर तथा मिथुन राशिस्थ चन्द्रमा सदैव अनिष्ट फलकारक रहेंगे। अतः आप 15 अगस्त से 14 सितम्बर के मध्य 5,10,15 तिथियों,श्रवण नक्षत्र, शुभयोग तथा कौलवकरण में कोई भी शुभकार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण क्रय विक्रय आदि अन्य शुभ कार्यों को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शनिवार प्रथम प्रहर एवं मिथुनराशिस्थ चन्द्रमा भी शुभकार्यों में वर्जित रखें। इन समस्त दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय खराब चल रहा हो मानसिक उद्विग्नता, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान उत्पन्न हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव गणेश जी की उपासना करनी चाहिए तथा गणेश चतुर्थी एवं बुधवार को उपवास करने चाहिए। साथ ही सोना, पन्ना, हरा वस्त्र, मूँग की दाल, घी इत्यादि पदार्थों का भी श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त बुध के तांत्रीय मंत्र के कम से

कम 8000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता आएगी।

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रों सः बुधाय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं स्त्रीं श्रीं बुधाय नमः।